आवो वली बाथो बीजी लीजिए, एक पूठीने अनेक।
हमणां हरावुं तमने, वली हंसावुं वसेक।। १७ ।।

आओ दूसरी बार, एक नहीं अनेक बार यही रामत करें और अभी तुमको हराकर सभी को हंसाएं।

कहे इंद्रावती हूं बलवंती, सुणजो सखियो वात।
नेहेचे तमने ऊंचूं जोवरावुं, वली रामत करूं अख्यात।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! मेरी बात सुनो, मैं बलवान हूं और बिना शक इसी रामत का खेल खेलकर तुमको मैं जीतकर दिखलाती हूं। अब ऐसी रामत खेलूंगी, जिसे आज तक कोई जानता ही नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। ८०२ ।।

छंदनी चाल

एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोसी।
अधुरी मधुरी, अमृत घूटें, छोले छूटे लिए लूटे।। १ ।।
लथ बथ, हथ सथ, अंग संग, रंग बंग चंग, चोली चूथी,
भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणी माणी,
वदू वाणी, रहोजी होजी, माजी काजी, भाखूं जाखूं,
रंगे राखूं, समारूं सिणगार जी।। २ ।।
वली वसेखे, राखूं रेखे, लेऊं लेखूं, जोऊं जोखूं,
प्रेमे पेखूं घसी मसी, आवी रसी, हंसी खसी वसी,
भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी।। ३ ।।
खंडी खांडी, छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूंमी, गाली लाली,
लोपी चापी, लाजी भाजी, दाझी काढी, आंजी हांजी,
जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इंद्रावती आ वार जी।। ४ ।।

।। प्रकरण ।। ४२ ।। चौपाई ।। ८०६ ।।

राग धन्या छंद

छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंग जी।
स्याम सुंदरी बंने सरखी जोड, जाणिए एकै अंग जी।। १ ।।
वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिए सघली अभंग जी।
रामत करतां आलिंघण लेतां, लटके दिए चुमन जी।। २ ।।
रमतां भीडे कठण कुचसों, छबकेसूं रंग लेत जी।
अमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इंद्रावती देत जी।। ३ ।।
अधुर लई मुख मांहें मारे वाले, आयत कीधी अपार जी।
भूखण उठया उठया अंगों अंगे, रहो रहो समरथ सार आधार जी।। ४ ।।

Nijanand App